पाठ - 26

बाबा गंभीरनाथ

हिंदू धर्म, दर्शन, अध्यात्म और साधना में 'नाथ सम्प्रदाय' का प्रमुख स्थान है। पूरे भारत में इस संप्रदाय के विभिन्न मठों एवं मंदिरों की देखरेख गोरखनाथ मंदिर से की जाती है। गोरखनाथ मंदिर की स्थापना के बाद से ही यहाँ पीठाधीश्वर या महंत की परम्परा रही है। गुरु गोरखनाथ के प्रतिनिधि के रूप में सम्मानित संत को महंत की उपाधि से विभूषित किया जाता है। इन्हीं प्रतिनिधियों में से एक संत योगिराज बाबा गंभीरनाथ हैं। गंभीरनाथ बीसवीं सदी के नाथ संप्रदाय के महान सिद्ध पुरुष माने जाते हैं।

गंभीरनाथ जी का जन्म जम्मू और कश्मीर राज्य के एक समृद्ध परिवार में हुआ था। ये बहुत ही सरल स्वभाव के थे। युवावस्था में ही इन्हें सांसारिक जीवन से वैराग्य उत्पन्न हो गया। वे शांति की तलाश में इधर-उधर भटकते रहे। वह अकसर घर से निकल पड़ते और जाकर श्मसान में बैठ जाते थे। एक दिन नाथ संप्रदाय से संबंधित एक संन्यासी गंभीरनाथ से मिले। गंभीरनाथ उनसे सत्संग करके बहुत प्रभावित हुए और उनसे दीक्षा प्रदान करने का निवेदन किया। उस संन्यासी ने गंभीरनाथ को स्वयं दीक्षा देने से मना कर दिया और उन्हें उत्तर प्रदेश राज्य के गोरखपुर में स्थित गोरखनाथ मंदिर के महंत से दीक्षा लेने की सलाह दी।

गंभीरनाथ उस 'नाथ संन्यासी' की सलाह को मानकर गोरखपुर के गोरक्षपीठ के महंत बाबा गोपालनाथ जी से मिले और उनसे दीक्षा प्राप्त की। उन्होंने गोरखपुर स्थित गोरक्षपीठ को ही अपने जीवन की तपस्थली बना लिया। ये पीठ की एक छोटी से कोठरी में रहकर ही गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रतिपादित योग की निरंतर साधना करने लगे। इन्होंने अनेक हिंदू धर्मशास्त्रों का गहनता से अध्ययन किया। इनकी श्रीमद्भगवद्गीता में अनन्य निष्ठा थी।

बाबा गंभीरनाथ ने नाथ संप्रदाय के योग सिद्धांत को पुनर्जीवित किया। 'नाथ योग परंपरा' में बाबा गंभीरनाथ का विशिष्ट स्थान है। इन्होंने मानवता को योगशक्ति से सम्पन्न किया तथा हठयोग, राजयोग और लययोग के क्षेत्र में सिद्धि प्राप्त की।

गंभीरनाथ ने बीसवीं सदी में योगी गोरखनाथ की योग साधना पद्धति का प्रतिनिधित्व करते हुए योग एवं ज्ञान का समन्वय स्थापित किया। इन्होंने महर्षि पतंजलि एवं गोरखनाथ की योग परंपरा का भी समन्वयन किया।

इन्होंने वाराणसी, गया, प्रयाग, अमरकंटक आदि तीर्थस्थलों सहित लगभग संपूर्ण भारत का भ्रमण किया। इस यात्रा में ये बहुत से ऋषियों व संतों से मिले। बाबा गंभीरनाथ ने स्वयं कभी भी अपनी

सिद्धियों का प्रदर्शन नहीं किया। उन्होंने अपनी सिद्धियों का उपयोग केवल मानव कल्याण के लिए किया। गंभीरनाथ जी ने आगे चलकर अपने अनुयायियों से कहा कि साधु संतों का आदर-सम्मान तथा सेवा करना आप सभी का कत्र्तव्य होना चाहिए।

बाबा गंभीरनाथ जी में एक और विशेषता थी कि वे बहुत अच्छा सितार बजाते थे। सितार की धुन पर भजनों का मधुर गायन भी करते थे। उनका मानना था कि सदा सत्य बोलना चाहिए, छल-प्रपंच से दूर रहना चाहिए। समस्त धर्मों और मतों का आदर करना चाहिए। उनके परम शिष्य और श्री अक्षय कुमार बंद्योपाध्याय ने 'योगिवर गंभीरनाथ' नामक पुस्तक की रचना की।

बाबा गंभीरनाथ पुरी (उड़ीसा) में श्रीमत विजयकृष्ण गोस्वामी से आध्यात्मिक संवाद के उपरांत 1906 से अपने अंतिम समय तक स्थायी रूप से गोरखपुर के मठ में ही रहे। मानवता का कल्याण करते हुए अंत में बाबा गंभीरनाथ ने 21 मार्च, 1917 को त्रयोदशी के दिन अपना नश्वर शरीर त्याग दिया। गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) के गोरक्षनाथ मंदिर के दिव्य, शांतिमय और पवित्र प्रांगण में ही उनकी समाधि स्थापित है, जो शाश्वत सत्य और शांति का प्रतीक है।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. संपूर्ण भारत के 'नाथ सम्प्रदाय' के मठों एवं मंदिरों की देखरेख कहाँ से की जाती है?

2. गुरु गंभीरनाथ ने किससे दीक्षा प्राप्त की?

3. गुरु गंभीरनाथ ने नाथ सम्प्रदाय के किस सिद्धांत को पुनर्जीवित किया?

4. बाबा गंभीरनाथ कौन सा वाद्ययंत्र बजाकर भजनों का गायन करते थे?

5. बाबा गंभीरनाथ ने अपने अनुयायियों से किन कत्र्तव्यों का पालन करने के लिए कहा?

6. बाबा गंभीरनाथ का पवित्र समाधि स्थल कहाँ स्थित है?

7. 'योगिवर गंभीरनाथ' पुस्तक की रचना किसने की है?